एम.ए. हिंदी कार्यक्रम

द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य

(जुलाई 2023 और जनवरी 2024 सत्रों के लिए)

वैकल्पिक पाठ्यक्रम :

मॉड्यूल '4' : मध्यकालीन कविता

एम.एच.डी – 21 : मीरा का विशेष अध्ययन

एम.एच.डी – 22 : कबीर का विशेष अध्ययन

एम.एच.डी – 23 : मध्यकालीन कविता–1

एम.एच.डी – 24 : मध्यकालीन कविता–2

सत्रीय कार्य

जुलाई–2023 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 31 मार्च, 2024
जनवरी–2024 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 30 सितम्बर, 2024

एम.एच.डी.–21 : मीरा का विशेष अध्ययन
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–21
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–21/टी.एम.ए./2023–24
कुल अंकः 100

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X3=30

(क) गोविन्द सूं प्रीत करी, तब ही क्यों न हटकी।
अब तो बात फैल गई, जेसे बीज बटकी।
बीच को बिचार छांडि, पारि प्रीति अटकी।।
अबै चूकै ठौर नाहि, जैसे कला नट की।
साँवरे को सीस धरे, सुरत प्रेम भटकी।।
घर घर में घणी होत, बाणी घट घट की।
हरिजी सों प्रीति राखि, लोक लाज पटकी।।
बाणी घुलि–गांठ परी, रसना गुण रटकी।
अब छुटायै छूटे नहीं, भोत बार झटकी।।
मदमांते हसती सम, फिरत प्रेम लटकी।
मीरां के प्रभु गिरधर बिन, कौन जाने घट की।।

(ख) बादल देख डरी हो, स्याम मैं बादल देख डरी।
काली पीली घटा उमंगी, बरस्यो एक घरी।
जित जाऊं तित पानि हि पानी, हुइ सब भोम हरी।।
जाका पिव परदेश बसत है, भीजै बार खरी।।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कीज्यो प्रीत खरी।।

(ग) वै न मिले जिनकी हम दासी।
पात पात बृन्दावन ढूँढ्यौ ढूंढि फिरी सगरी मैं कासी।।
कासी कौ लोग बड़ो विसवासी मुख मैं राम बगल में फांसी।।
आधी कासी मैं बाँमण बणियाँ आधी कासी बसे सन्यासी।।
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी हरिचरणां की रहौं मैं दासी।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक का लगभग 500 शब्दों में) दीजिए : 15X3=45
(क) मीरा की भक्ति के शास्त्रीय स्वरूप का विवेचन कीजिए।
(ख) मध्यकालीन भक्त कवयित्रियों का परिचय दीजिए।
(ग) मीरा की कविता में स्त्री सशक्तीकरण के स्वरों की समीक्षा कीजिए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक विषय पर लगभग 100 शब्दों में टिप्पणी लिखिएः 5X5=25
(क) मीरा के कृष्ण
(ख) लोक–संस्कृति
(ग) इतिहास ग्रंथों में मीरा
(घ) अक्क महादेवी
(ङ) मेड़ता में मीरा

एम.एच.डी.–22 : कबीर का विशेष अध्ययन
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–22
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–22/टी.एम.ए./2023–24
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित काव्याशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X3=30

(क) विनसि जाइ कागद की गुड़िया,
जब लग पवन तबै लग उड़िया।।
गुड़िया कौ सबद अनाहद बोलै, खसम लियै कर डोरी डोलै।
पवन थक्यो गुड़िया ठहरानी, सीस धुनै घुनि रोवै प्राँनी।।
कहै कबीर भजि सारंग पानी, नाहीं तर ह्वैहैं खैंचा तानी।।

(ख) झगडा एक नवेरो राँम,
जें तुम्ह अपने जन सूँ काँम।।
ब्रह्म बड़ा कि जिनि रू उपाया, बेद बड़ा कि जहाँ थैं आया।।
यह मन बड़ा कि जहाँ मन मानै, राम बड़ा कि राँमहि जानैं।
कहै कबीर हूँ खरा उदास, तीरथ बड़े कि हरि के दास।।

(ग) जन धंधा रे जग धंधा, सब लोगनि जाँणौं अंधी,
लोभ मोह जेवड़ो लपटानी, बनहीं गाँठि गह्यौ फंदा।।
ऊँचे टीवे मंछ बसत है, ससा बसे जल माँहीं।
परवत ऊपरि डूबि मूवा, नीर मूवा धूँ काँही।।
जलै नीर तिण षड़ उबरै बैसंदर ले सींचै।
ऊपरि मूल फूल बिन भीतरि, जिनि जान्यौ तिनि नीकै।।
कहै कबीर जाँनही जाँनै, अनजानत दुख भारी।
हारी वाट बटाऊ जीत्या, जानत की बलिहारी।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों (प्रत्येक) के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिएः 15X3=45

(क) निर्गुन संत परंपरा का परिचय देते हुए कबीर का महत्त्व प्रतिपादित कीजिए।
(ख) कबीर के काव्य में धार्मिक रूढ़ियों के विविध रूपों का सोदाहरण विश्लेषण कीजिए।
(ग) कबीर के काव्य में निहित व्यंग्य के विविध रूपों का विवेचन कीजिए।

3. निम्नलिखित विषयों में से प्रत्येक पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 5X5=25

(क) कबीर पर गोरखनाथ का प्रभाव
(ख) कबर के ब्रह्म
(ग) चक्र और षट्चक्र
(घ) इतिहास ग्रंथों में कबीर
(ङ) स्वाधीनता आंदोलन और कबीर

एम.एच.डी.–23 : मध्ययुगीन कविता–1
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–23
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–23/टी.एम.ए./2023–24
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X4=40

(क) लगु जैस इह अहि बुतकारी। चन्दन जैफर मिरै सँवारी।।
सरग पवान लाग जनु आयी। चाहत बैंसौं जाइ उड़ायी।।
बाँसपोर हुत जनु घर काँढ़ी। अछरि जइस देखि मैं ठाढ़ी।।
कोंइ पुहुप अस अंग गँधाई। रितु बसन्त चहुँ दिसि फिर आई।।
संग बास नौखण्ड गँधाने। बास केतकी भँवर लुभाने।।
उपेन्दर गोयन्द चँदरावल, बरभाँ बिसुन मुरारि।।
गुन गँधरव रिखि देवता, रूप विमोहे नारि।।

(ख) ऊँचे मन्दिर शाल रसोई, एक धरी पुनि रहनि न होई।।
यह तन ऐसा जैसे घास की टाटी, जल गई घास, रलि गई माटी।।
भाई बन्धु कुटुम्ब सहेला, ओइ भी लागै काढु सबेरा।।
घर की नारि उरहि तन लागी, वह तो भूत–भूत करि भागी।।
कह रैदास जबै जग लूट्यौ, हम तौ एक राम कहि छूट्यौ।।

(ग) बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भईं विषम ज्वाल की पुंजैं।।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत वृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।
पवन पानि घनसार संजोवनि दधिसुत किरन भानु भईं भुंजैं।।
ए, ऊधो, कहियो माधव सो बिरह कदन करि मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु को मग जोवत अँखियाँ भई बरन ज्यों गुंजैं।।

(घ) प्रान वही जु रहैं रिझि वापर रूप वही लिहिं वाहि रिझायो।
सीस वही जिन वे परसे पद अंक वही जिन वा परसायो।।
दूध वही जु दुहायो री वाही दही सु सही जो वही ढरकायो।
और कहाँ लौं कहौं रसखनि री भाव वही जु वही मनभायो।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक का उत्तर लगभग 500 शब्दों में) दीजिए: 15X3=45
(क) हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में भक्ति काव्य संबंधी विविध दृष्टिकोणों की चर्चा कीजिए।
(ख) रविदास की भक्ति एवं दर्शन का विश्लेषण कीजिए।
(ग) रसखान की प्रेम भावना का सोदाहरण विवचन कीजिए।

3. निम्नलिखित विषयों में से प्रत्येक पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 5X3=15
(क) चंदायन में प्रेम का स्वरूप
(ख) 'माया' की अवधारणा
(ग) सूरदास के काव्य में लोकजीवन

एम.एच.डी.–24 : मध्यकालीन कविता–2
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–24
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–24 / टी.एम.ए. / 2023–24

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X4=40

(क) खैर, खून, खाँसी, खुसी, बैर प्रीति मदपान।
रहिमन दाबे ना दबें, जानत सकल जहान।।

(ख) मूलन ही की जहाँ अधोगति केशव गाइय।
होम हुताशन धूम नगर एकै मलिनाइय।।
दुर्गति दुर्गति ही जु कुटिल गति सरितन ही में।
श्रीफल को अभिलाष प्रगट कवि कुल के जीमें।।

(ग) मोर–पखा 'मतिराम' किरीट मैं, कंठ बनी बनमाल सुहाई।
मोहन की मुसकानि मनोहर, कुंडल डोलनि मैं छवि छाई।।
लोचन लोल बिसाल बिलोकनि, को न बिलोकि भयो बस माई।
वा मुख की मधुराई कहा कहौं ? मीठी लगै अँखियान–लुनाई।।

(घ) सांसन ही सों समीर गयो, अरु आंसुन ही सब नीर गयो ढरि।
तेज गयो गुन लै अपनो, अरु भूमि गई तन की तनुता करि।।
देव जिये मिलिबेही की आस, कि आसहु पास अकास रह्यो भरि।
जा दिन ते मुख फेरि, हरे हंसि, हेरि, हियो जु लियो हरि जू हरि।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक का लगभग 500 शब्दों में) दीजिए: 15X3=45

(i) नीतिकाव्य परंपरा का परिचय दीजिए।
(ii) 'देव' की रचनाओं का परिचय देते हुए उनकी विशेषताएँ बताइए।
(iii) 'केशवदास' के काव्य–वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक विषय पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए। 5X3=15

(i) बेनी प्रवीन
(ii) 'मतिराम' के काव्य में प्रकृति वर्णन
(iii) 'रहीम' का परवर्ती कवियों पर प्रभाव